मॉरिशस में हिंदी की बयार

डॉ अशोक कुमार
सहायक प्रोफेसर (हिंदी)
राजकीय कन्या महाविद्यालय सेक्टर-14 गुरुग्राम

आज हिंदी किसी क्षेत्र विशेष के दायरे में नहीं बंधी है।इसका पसार पूरे विश्व में है। भारत के अतिरिक्त दुनिया के लगभग समस्त देशों में तीन करोड़ से अधिक भारतवंशी हिंदी को किसी न किसी रूप में परस्पर संपर्क, सूचना, संस्कृति, शिक्षा, मनोरंजन ,व्यापार, व्यवसाय ,राजकाज आदि का माध्यम बनाए हुए हैं। हिंदी के वैश्विक प्रसार में दुनिया के कोने- कोने में डेढ़ सौ से अधिक देशों में बसे भारतीय समुदाय संस्थाओं और व्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जन- भाषा से विश्व- भाषा तक संचरण सील हिंदी ने बहुत लंबी यात्रा तय की है। भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी ने देश की सीमाएं लांघ कर दिग- दिगंत में अपना विस्तार किया है। कितनी रोचकता है कि भाषा कहलाती तो किसी राष्ट्र की है । प्रत्येक राष्ट्र की सीमाएं होती हैं लेकिन भाषा राष्ट्रीय विशेष की सीमाओं को लांघ कर निकट एवं दूरस्थ राष्ट्रों की सीमाओं में सुगंधित मलय समीर के झोंके की तरह अबाध गति से प्रवेश कर जाती है। हिंदी मेल -मिलाप और सौहार्द की भाषा है । यह किसी शासक की तोप - तलवार के सहारे किसी दूसरे देश में नहीं पहुंची और न ही हिंदी ने किसी देश की भाषा को अपदस्थ कर अपना स्थान बनाया है । यह तो अपनी उर्जा, विपुल साहित्य भंडार एवं वेद उपनिषद गीता वाल्मीकि रामायण महाभारत की गौरवशाली कथाओं ,रामचरितमानस की छाया में वसुधैव कुटुंबकम् , सर्वे भवंतु सुखीन:, एवं हरे रामा हरे कृष्णा का संदेश लेकर जहां भी पहुंची उसका हार्दिक स्वागत हुआ ,फिर चाहे वह कम्युनिज्म का गढ़ रहा हो या कभी सूर्य न डूबने वाले सत्ता का स्वामी ग्रेट ब्रिटेन हो अथवा परम ताकतवर अमेरिका हो।

मॉरिशस में हिंदी का इतिहास लगभग एक सौ पचास वर्ष पुराना है। सन 1834-1910 के बीच लगभग चार लाख पचास हजार भारतीय प्रवासी मॉरिशस पहुंचे। ब्रिटिश सरकार ने छल-कपट से उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, तमिलनाडु , आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़िसा आदि प्रदेशों से अनेक भारतीयों को प्रलोभन देकर 'इंडियन इण्डेचर लेबर एक्ट' के अंतर्गत इन मज़दूरों को कलकत्ता तथा मद्रास के बंदरगाहों से पानी के जहाजों से जानवरों की तरह भरकर मॉरिशस के उजाड़ द्वीपों में छोड़ दिया । इनमें से कुछ ने तो रास्ते में ही दम तोड़ दिया और जो वहां पर पहुंचे उन्होंने दुर्दशा में जीवनयापन करना अपनी नियति मान ली। यहां पर ब्रिटिश मालिकों ने जानवरों जैसा व्यवहार करते हुए इन लोगों से गन्ने की खेती कराना प्रारम्भ कर दिया।अब गन्ने से चीनी बना कर यूरोप को भेजने का भारी लाभदायक व्यवसाय इन्हीं मजदूरों के बल पर होने लगा। ऐसे उजाड़ द्वीप से ये बेबस मजदूर न भाग सकते थे,न कराह सकते थे और न ही अपने मालिकों के खिलाफ आवाज उठा सकते थे। "वास्तव में उन अभागे भारतीयों की करुण कथा इतनी विकृत,हृदय विदारक और मर्मस्पर्शी है कि यदि पृथ्वी को पत्र और समुद्र को स्याही बनाकर लिखने बैठे,तो भी उसे यथावत अंकित कर सकना असंभव है"1 इसी दुर्दशा के बीच मॉरिशस में हिंदी का उदय स्वत: एक रोमांचकारी एवं भारतीय जन-मानस की संघर्षों से जूझने वाली अपार क्षमता की कहानी है। ये सब गिरमिटिया मजदूर भारत से जाते समय अपने साथ रामचरितमानस, गीता और हनुमान चालीसा, सत्यार्थ प्रकाश ले जाना नहीं भूले थे। अधिकांश मजदूर भोजपुरी बोलने वाले थे। शाम को काम से थक-हार जाते तो एक जगह पर बैठ कर रामचरितमानस की चौपाइयों का गायन करते थे और हनुमान चालीसा पढ़ते थे। इसी सामूहिक पाठ ने एक ओर उन्हें धैर्य पूर्वक संघर्ष तथा दूसरी और अपनी भाषा, संस्कृति, रीति- रिवाज को जीवित रखने की प्रेरणा दी। उन्नीसवीं शताब्दी में भारत से उदरपूर्ति हेतु निकले इन भारतीयों की भाषा, धर्म और संस्कृति ही उनकी पूंजी थी। इसी के आधार पर इन्होंने अनेक अभावों को सहते हुए अपने आपको तथा अपने अस्तित्व को बचाए रखा।

मॉरिशस में हिंदी की शिक्षा तथा हिंदी में शिक्षा का सूत्रपात उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में होता है। लेकिन व्यवहारिक रूप से हिंदी भाषा-भाषियों के शिक्षक गिरमिटिया मजदूर ही थे। "जहां तक संस्थानी शिक्षा की बात है-मॉरिशस में पूर्व प्राथमिक से लेकर स्नातकोत्तर तक की शिक्षा निशुल्क है। हिंदी की शिक्षा की बात करें तो 184 वर्ष पहले जब गिरमिटिया यहां लाए गए,तो उनमें से सारे के सारे निरक्षर नहीं थे।कुछ साक्षर भी थे जो 'बैठकाओं' में विश्व राजनीतिक चर्चा करने के साथ- साथ रामचरितमानस वह सत्यार्थ प्रकाश का पाठ कर रहे थे। यंत्रणा शिविर जैसी परिस्थितियों में ऐसे साक्षरों ने ही कोयले से अपनी अगली पीढ़ी को हिंदी सिखाई।"5 मॉरिशस भौतिक रूप से भारत और विश्व के लिए विदेश है परन्तु सत्य यह है कि यह भारतीय संस्कृति का संवाहक है, यहां की जनसंख्या में भारतीय मूल के लोगों का ज्यादा प्रतिनिधित्व है, इसीलिए इसे 'लघु भारत' के नाम से जाना जाता है। विदेशों धरती पर हिंदी भाषा तथा साहित्य की नींव डालने वाले शर्तबंद मजदूर यानी 'गिरमिटिया' थे और उन्होंने ही भारतीय भाषा और संस्कृति को सुरक्षित रखा।

इन भारतीय मजदूरों का साहस एवं धैर्य बढ़ाने के लिए सबसे पहले महात्मा गांधी ने प्रयास किए। गांधी जी ने अपनी दक्षिणी अफ्रीका की यात्रा के दौरान मॉरिशस के गिरमिटिया मजदूरों को मोका की जनसभा में शिक्षा एवं अन्याय के विरुद्ध राजनीतिक चेतना जागृत करने का महत्वपूर्ण संदेश दिया। "गांधी जी अफ्रीका से लौटते हुए संयोगवश 1901 में उन्नीस दिन के लिए मॉरिशस रुके थे। उन्होंने भारतीय मजदूरों को अपने बच्चों को शिक्षित करने तथा राजनीति में सक्रियता से भाग लेने की प्रेरणा दी।सन 1907 में उन्होंने मणिकलाल डॉक्टर (वकील) को भारतीयों को हितार्थ मॉरिशस भेजा। यहीं से हिंदी का अध्याय शुरू होता है।"2 मणिकलाल ने यहां पर आर्यसमाज की स्थापना की, जिससे लोगों में शिक्षा के प्रति रुचि पैदा हुई तथा अपनी भाषा के प्रति सजगता आई। तथा मणिकलाल डॉक्टर ने भारत से प्रेस मंगवाकर पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया तथा भारतियों में जागरण पैदा किया । मॉरिशस में हिंदी लेखन के कार्य में 'हिन्दुस्तान' पत्रिका का महत्त्वपूर्ण योगदान है। "1909 में शुरू 'हिन्दुस्तान' 1914 में बंद हो गया समय के साथ -साथ अन्य पत्र 'मॉरिशस आर्य पत्रिका', 'आर्यवीर' ,'जागृति', 'आर्योदय', 'जनता और जमाना' आदि इतिहास हो चले हिंदी पत्रकारिकाओं में 'आक्रोश' का अब भी नियमित प्रकाशन होता है,जिसका स्वरूप मिश्रित है।"3 मणिकलाल डॉक्टर, स्वामी मंगलानंद, डॉ चिरंजीव से प्रारम्भ होकर हिंदी लेखन,शिक्षण की जो धारा विकसित हुई वह अबाध गति से बढती चली गई। सन 1926 में वहां पर हिन्दी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई। पहली पाठशाला तिलक विद्यालय के नाम से जाने गए और आगे चलकर ये हिंदी भवन के नाम से जाने लगे।

भारत से बाहर हिंदी देश के रूप में मॉरिशस की ख्याति तेजी से बढ़ती जा रही है। इसी कारण यहां पर दूसरे , चौथे और ग्यारहवें विश्व हिंदी सम्मेलन सम्पन्न हो चुके हैं।मॉरिशस अकेला ऐसा देश है जिसने हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषा बनाने के लिए विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की। इस सचिवालय का कार्य वह सब प्रयास करना है,जिन माध्यमों से हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बन सके। यही नहीं अपितु यहां पर अंतरराष्ट्रीय रामायण मेले का आयोजन भी हो चुका है । यहां पर पूर्व विदेश मंत्री स्वर्गीय श्रीमती सुषमा स्वराज ने रामायण केंद्र की स्थापना भी की है । मॉरिशस में हिंदी लेखन कार्य लगभग सन 1913 से पहली रचना 'होली' नामक कविता से प्रारम्भ हुआ जो आज तक अबाध गति से जारी है।"इस पहली कविता। से लेकर सन् 1960 तक विभिन्न हिंदी पत्र-पत्रकारिकाओं में 272 कविताएं छपी हैं,जो प्रहलाद रामशरण ने खोजी तथा 1977 में प्रकाशित दो काव्य-संकलनों में पहली बार मॉरिशस के हिंदी समाज के सम्मुख आईं।"6 सन 1935 से यहां पर आधुनिक युग प्रारम्भ होता है। इस समय तक वहां पर 43 विद्यालयों में एक सप्ताह में एक घंटे हिंदी पढ़ाई जाती थी। सन 1950 से हिंदी अध्यापक की नियुक्ति सरकार की ओर से होने लगी । सन 1962 तक आते-आते हिंदी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा,विशारद और साहित्य रत्न की परीक्षाएं होने लगी। सन 1975 से हाईस्कूल में हिंदी मुख्य विषय के रूप में पढाई जाने लगी। मॉरिशस गिरमिटिया मजदूरों ने अपनी मुक्ति शिक्षा में देखी थी। इसी का असर अभी भी दिखाई देता है। वरिष्ठ साहित्यकार राज हीरामन का कहना है कि,"बच्चा पांच साल से विश्वविद्यालय स्तर तक हिंदी नि:शुल्क पढ़ रहा है।पीएच.डी.तक के लिए हिंदी में प्रावधान है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए आर्य समाज,सनातन सभाएं, आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा, हिंदी प्रचारिणी सभा आदि स्वैच्छिक संस्थाएं कार्य कर रही हैं।"4 इस प्रकार मॉरिशस में आज एस एस सी की परीक्षा से लेकर मारीशस विश्वविद्यालय तथा महात्मा गांधी संस्थान के सहयोग से हिंदी का शिक्षण बी ए,एम ए,पी जी सी आई,एम फिल,पीएच डी तक हिंदी पठन-पाठन उच्चस्तरीय गति से हो रहा है। हिंदी संस्थान द्वारा समय-समय पर हिंदी सप्ताहों का आयोजन किया जाता है। विश्वस्त आंकड़ों के अनुसार लगभग बारह लाख कुछ आबादी वाले इस द्वीप में पांच लाख हिंदी भाषी हैं। यहां की सभी 254 प्राथमिक पाठशालाओं में हिंदी पढ़ाई जाती है। लगभग 585 अध्यापक हिंदी पढा रहे हैं तथा 48 हजार 842 छात्र हिंदी पढ रहे हैं। माध्यमिक स्तर पर भी सभी 64 विद्यालयों में हिंदी शिक्षण जारी है। निजी विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में भी हिंदी शिक्षण निरंतर जारी है। मीडिया,की वी, इंटरनेट,एम बी सी के रेडियो तथा की वी चैनलों में हिंदी समाचार, हिंदी गाने, हिंदी फिल्में, हिंदी धारावाहिक हर समय देखने को मिलते हैं हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु हिंदी प्रचारिणी सभा, महात्मा गांधी संस्थान, आर्य सभा मॉरिशस, इंदिरा गांधी सांस्कृतिक केंद्र, हिंदी लेखक संघ कार्यरत हैं। मॉरिशस की सरकार हिंदी के महत्व को समझते हुए हिंदी भाषा को प्रोत्साहित करने का काम कर रही है।

जब मॉरिशस आजाद हुआ उसके दो वर्ष बाद मॉरिशस में भारत से कुछ शिक्षकों को अध्यापन के लिए बुलाया गया। उन्होंने वहां के शिक्षकों के साथ-साथ जिज्ञासु व्यक्तियों को हिंदी का प्रशिक्षण दिया गया। बाद में वहां के स्कूलों में हिंदी की शिक्षा व्यवस्थित तथा नियमित रूप से शुरु कर दी गई। "1949 में प्रो. रामप्रकाश को मॉरिशस बुलाया गया। उन्होंने हिंदी शिक्षकों को प्रशिक्षित किया। इसके बाद वर्ष 1954 से माध्यमिक स्तर पर हिंदी का शिक्षण शुरू हो गया।"7 तभी से वहां पर हिन्दी का आधुनिक काल का प्रारम्भ होता है।मॉरिशस में प.वासदेव बिसुनदयाल से लेकर श्री हेमराज सुंदर जैसे आधुनिक साहित्यकारों की यहां पर एक लंबी परम्परा रही है। मॉरिशस के प्रमुख कवियों में बृजेन्द्र कुमार भगत, मधुकर, सोमदत्त बटोरी,मुनिश्वर लाल, चिंतामणि, अभिमन्यु अनत, इंद्रदेव भोला,मोहन लाल, ब्रजमोहन, हरिनारायण,वेणी माधव,रामखिलावन, मोहनलाल हरदयाल,पूजानंद नेमा, सूर्यदेव सिबरत,राजहीरामन, रामदेव धुरंधर, हेमराज सुंदर, ठाकुर प्रसाद मिश्र, पंडित लक्ष्मी नारायण चतुर्वेदी 'रसपुंज'। 'रसपुंज' की कविताएं मॉरिशस के राष्ट्रीय जागरण की ध्वजवाहिका मानी जाती हैं। मॉरिशस के राष्ट्र कवि बजेंद्र कुमार भगत का आगमन कविता के क्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना लेकर

होता है। उनके पचास से अधिक कविता संग्रह मौजूद हैं। वे अपने बारे में कहते हैं कि 'मेरा यह शरीर मारीशस का है, लेकिन आत्मा भारतीय है ' कमल किशोर गोयनका ने उन्हें मॉरिशस का मैथिलीशरण गुप्त माना है।

अभिमन्यु अनत की लगभग सौ कविता संग्रह छप चुके हैं, जो 'नागफनी की उलझी सांसे' , 'कैक्टस के दांत','एक डायरी बयान', 'गुलमोहर खिल उठा' आदि में संकलित हैं। इन सभी कविताओं में मॉरिशसीय अस्मिता के साथ- साथ भारतीयता और हिंदी भाषा के साथ अटूट प्रेम की प्रवृत्तियां मिलती हैं।

"मॉरिशस में कविता के समानांतर कहानी लिखी जा रही थी। उपन्यास का लेखन बहुत समय बाद होता है। सन् 1936-37 में पंडित आत्मा राम ने तीसरी-चौथी कक्षा के लिए एक कहानी लिखी थी।"8 लेकिन वास्तविक रूप से कहानी लेखन की शुरुआत सन् 1950 से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से शुरू होता है। मॉरिशस में हिंदी कहानी का एक विशाल भवन खड़ा करने वाले कहानीकारों में इंद्रभूषण, तारकेश्वर नाथ चतुर्वेदी, महेशनंदन सिंह, लक्ष्मी बद्री, दिवाकर कुमार, वेणीमाधव रामलेखावन, अभिमन्यु अनत, इंद्रदेव भोला, केशवदत्त चिंतामणि रामदेव धुरंधर, पूजानंद नेमा, दीपचंद बिहारी, भानुमती नादान, पुष्पा सम्मा आदि का नाम प्रमुख है। इनमें अभिमन्यु अनत मॉरिशस के प्रमुख कहानीकार माने जाते हैं। शैली और शिल्प पर भारतीय कहानी का प्रभाव है।"मॉरिशस की कहानियों में वर्ग-संघर्ष और मानव मन की जुझारू प्रवृतियों का चित्रण किया गया है। ये कहानियां जमीन से जुड़ी हुई हैं। इसमें शोषण के इतिहास के साथ -साथ मजदूर वर्ग की विवशता की कथा है।"9 वस्तुत: संघर्ष, पीड़ा, अदम्य जिजीविषा इन साहित्यकारों को विरासत में मिली जिसकी मजबूत नींव पर इन्होंने ऐसा विशाल कहानी साहित्य निर्मित कर दिया जो सहज ही भारतीय सरोकारों को दर्शाता है।मॉरिशस का हिंदी कहानी लेखक निरंतर अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष करता रहा है। उन्होंने मात्र कहानी की परम्परा को विकसित ही नहीं किया वरन् अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। मॉरिशस की हिंदी कहानियों में भारत का दिल धड़कता है।

मॉरिशस में उपन्यास लेखन का प्रारम्भ सन् 1960 से माना जाता है। कृष्णलाल बिहारी पहले उपन्यासकार माने जाते हैं, जिन्होंने 'पहला कदम' नामक उपन्यास लिखकर उपन्यास लेखन परम्परा का सूत्रपात किया। इनके बाद इस क्षेत्र में अभिमन्यु अनत का प्रादुर्भाव होता है, जिन्हें उपन्यास सम्राट कहा जाता है। "वे उपन्यास सम्राट हैं और मॉरिशस के प्रेमचंद। उनमें महाकलात्मक प्रतिभा है और वे समाज के बंधन तथा मुक्ति, अपनी संस्कृति, अस्मिता, अस्तित्व तथा स्वाधीनता के महान संघर्ष के नायक हैं।.....अनंत ने अपने देश के गूंगे इतिहास को 'लाल पसीना', 'गांधी जी बोले थे','और पसीना बहता रहा' की उपन्यास त्रयी में प्रस्तुत किया, जो महाकाव्यीय चेतना संघर्ष तथा उर्जा के कारण 'महाकाव्यात्मक उपन्यास' की संज्ञा को सार्थक करते हैं।"10

मॉरिशस के हिंदी साहित्य में नाटक भी काफी लिखे गए। मॉरिशस का प्रथम नाटक 'जीवन संगिनी' माना जाता है, जिसकी रचना जयनारायण राय ने सन् 1941 में की थी। इनके अतिरिक्त अभिमन्यु अनत,महेश रामजियावन, अस्तानंद सदासिंह, धन्ना नारायण,, सूर्यदेव सिबोरत,धनराज शंभू,विनय देसाई, रामदेव धुरंधर आदि का नाम प्रमुख नाटककारों में शामिल है। यहां के नाटक के बारे में कहा जाता है 'मॉरिशस में नाटक अभावों और बिना रंगमंच के जन्मा और विकसित हुआ, पगडंडी बनाकर चला और मुख्य सड़क पर आ गया। यहां का नाटक जिस रास्ते पर चल रहा है,यह उसका अपना बनाया रास्ता है।'

मारीशस में बाल साहित्य का विकास पिछले कुछ दशकों में हुआ है वर्तमान में बच्चों के लिए कहानियां, कविताएं आदि खूब लिखी जा रही हैं बाल साहित्यकारों में डा. कामता कमलेश,विद्वंती अयोध्या, प्रहलाद रामशरण तथा विष्णु दयाल का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। जीवनी साहित्य की शुरुआत भी सन् 1967 से मानी जाती है। अभिमन्यु अनत, उदय नारायण गंगू,बजेंद्र भगत,रामबरण आदि लेखकों ने जीवनी साहित्य पर अपनी लेखनी चलाई है। आजकल लघुकथा मॉरिशस की स्वतंत्र विधा बन गई है। अभिमन्यु अनत,इंद्रदत्त भोला, रामदेव धुरंधर आदि प्रमुख लघुकथाकार हैं। इसके अतिरिक्त संस्मरण, रिपोर्ताज, यात्रा साहित्य पर भी लिखा जा रहा है। कविता, उपन्यास, कहानी, लघुकथा, निबंध, आलोचना का विस्तार मॉरिशस में इतना है कि भारत के बाद मॉरिशस ही वह देश है जहां प्रकाशित साहित्य की संख्या एवं गुणात्मक विविधता देखने को मिल सकती है।एक भिन्न देश और भिन्न भाषा-भाषी क्षेत्र में हिंदी साहित्य की रचना व उसके संघर्ष के लिए इतना लंबा समय लगा देना और विश्व भर में अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ना मॉरिशस के हिंदी लेखकों की अदम्य जिजीविषा व सच्ची लगन का परिणाम है। यह हिंदी व हिंदी साहित्य के लिए गौरव की बात है कि भारत से भिन्न भूमि में हिंदी साहित्य की सर्जना का इतना बड़ा कार्य हो रहा है।

18 से 20 अगस्त सन् 2018 में मॉरिशस में सम्पन्न ग्यारहवें विश्व हिंदी सम्मेलन में जाने का अवसर मुझे भी मिला।इस सम्मेलन में मुझे अपना शोध पत्र 'वैश्विक हिंदी एवं भारतीय संस्कृति' पढ़ने का अवसर मिला।वहां पर सम्मेलन स्थल का नाम तुलसीदास नगर रखा हुआ था। सभी सभागारों के नाम हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकारों के नाम पर रखे गए थे। दिल्ली हवाई अड्डे से ही हमें हिंदीमय माहौल देखने को मिला।मॉरिशस एयरवेज के हवाई जहाज पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था,'ग्यारहवें विश्व हिंदी सम्मेलन' में आपका स्वागत है। साथ में मॉरिशस के राष्ट्रीय पक्षी डोडो एवं हमारे राष्ट्रीय पक्षी मोर का लोगो बना हुआ था।यह दृश्य सभी के लिए मनमोहक था। मॉरिशस हवाई अड्डे पर तो विश्व हिंदी सम्मेलन से संबंधित जगह-जगह पर सब कुछ हिंदी में लिखा हुआ था। यही सब हिंदी प्रेम है। एक सप्ताह के प्रवास के दौरान वहां के लोगों से मिलने, बात करने एवं वहां के 'महात्मा गांधी हिंदी संस्थान', अप्रवासी घाट,सात रंगों वाली मिट्टी,

म्यूजियम, विश्व हिंदी सचिवालय, गंगा तालाब, रामायण केंद्र, पोर्ट लुई तथा समुद्री तटों आदि स्थानों को देखने का अवसर मिला। इस दौरान किसी भी स्थान पर ऐसा नहीं लगा कि यहां पर हिंदी भाषा के सुनने या समझने वाले लोग नहीं हैं। सभी जगहों पर हिंदी में बात करने वाले लोग मिले तथा बड़ी सरगर्मी से हमारा स्वागत होता रहा। यहां पर लोग हिंदी बोलते समझते हैं परन्तु हिंदी पहली भाषा नहीं है । यहां पर अंग्रेजी,फ्रेंच हिंदी एवं क्रियोल बोली जाती है।क्रियोली यहां की क्षेत्रीय भाषा है,जो मुख्यतया सभी लोगों द्वारा बोली जाती है। यहां अच्छी बात यह है कि हिंदी और संस्कृत सीखने का प्रयास लोग इस तरह से करते हैं जैसे धार्मिक उपक्रम हो। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यहां के विद्यार्थी भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पढ़ने आते हैं।इस दौरान वहां के लोगों, संस्कृति, शिक्षाऔर हिंदी की स्थिति और रुचि को नजदीकी से समझने का अवसर मिला। इस देश की यात्रा के दौरान ऐसा लगा ही नहीं कि आप विदेशी धरती पर हैं, क्योंकि जगह -जगह पर मंदिर दिखाई दे जाते हैं, पहाड़ों के बीच लहलाते गन्ने के खेत,और सुनने को हिंदी। हमारे सभी धार्मिक अनुष्ठान यहां पर होते हैं विवाह, सगाई, व्रत, पूजा, तिलक, तथा सभी हिन्दू त्योहार,होली, दीवाली, दशहरा, रामलीला, तीज, जन्माष्टमी,रामनोमी आदि बड़े धूमधाम से मनाए जाते हैं।

मॉरिशस में हिंदी भाषा का इतना जो प्रचार-प्रसार हो रहा है उसका श्रेय वहां की जनता के अतिरिक्त वहां के साहित्यकारों को भी जाता है, क्योंकि उन्होंने अब तक हिंदी को न सिर्फ जीवित रखा है, बल्कि अपनी जड़ों की पहचान कराने में सशक्त भूमिका भी निभाते रहे हैं।

मॉरिशस में हिंदी में जितना साहित्य लिखा गया उतना किसी देश में नहीं। वहां पर भारतीय मूल के साहित्यकारों ने हिंदी की सांस्कृतिक तथा जातीय परंपरा का पोषण करते हुए मारीशस की धरती पर हिंदी भाषा-साहित्य का एक विशाल भवन तैयार किया है।

1.भवानी दयाल, प्रवासी की आत्मीय,पृ.3
2.अलका धनपत, आजकल (पत्रिका), दिल्ली, मैचों में जनवरी 2016,पृ.12
3.कुणाल सिंह,भारत की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ,पृ.349
4 राज हीरामन, आजकल (पत्रिका) , दिल्ली, जनवरी 2016,पृ.24
5. रविन्द्र कालिया, हिंदी की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ,पृ.348
6.रवीन्द्र कालिया, हिंदी की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ,पृ.152
7. रवीन्द्र कालिया, हिंदी की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ,पृ.350
8.प्रो.प्रदीप श्रीधर, प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा एवं चिंतन, विद्या प्रकाशन, कानपुर,पृ.23
9. प्रो. प्रदीप श्रीधर, प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा एवं चिंतन, विद्या प्रकाशन, कानपुर ,पृ.370
10.कमल किशोर गोयनका, प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा एवं चिंतन, विद्या प्रकाशन, कानपुर,पृ.67